



प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी



अब तक का सफर

14 सितम्बर 2025



जयवीर सिंह
मंत्री
पर्यटन एवं संस्कृति
उत्तर प्रदेश



कार्यालय : कक्ष संख्या 73 A-B,
मुख्य विधान भवन,
सचिवालय, लखनऊ।
☎ : 0522-2239251
ई-मेल : tourismminister.up@gmail.com

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि आप द्वारा प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी की 15वीं वर्षगांठ पर स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी भारतीय संगीत, लोक संगीत और सांस्कृतिक चेतना के प्रसार हेतु निरंतर कार्यरत है तथा समय-समय पर सांगीतिक कार्यक्रम व कार्यशालाएं आयोजित कर हमारी नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य रही है।

उक्त स्मारिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

(जयवीर सिंह)

प्रो० उमा गर्ग,
संस्थापक-प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी,
एस-706, सिलीकॉन सिटी (आम्रपाली ग्रुप)
सेक्टर-76, गौतमबुद्धनगर,
नोएडा-201301



प्रो० योगेश सिंह
कुलपति

Prof. Yogesh Singh
Vice-Chancellor

दिल्ली विश्वविद्यालय
University of Delhi

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

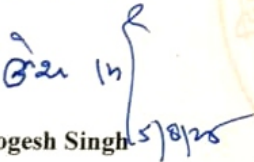
No. DU/VC/2025/542
5th August 2025

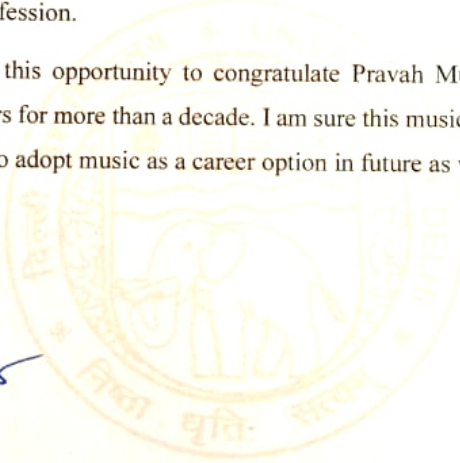
Message

It gives me immense pleasure to know that Pravah Music Society is completing its glorious journey of 15 years. On this auspicious occasion, I would like to congratulate Prof. Uma Garg, a renowned former Professor of the Faculty of Music and Fine Arts, University of Delhi, who is the Founder President of this music society for her sustained endeavour in significantly contributing towards encouragement of the talented students to pursue music a profession.

I would like to take this opportunity to congratulate Pravah Music Society for their constructive endeavours for more than a decade. I am sure this music society will continue to enthuse the youth to adopt music as a career option in future as well.

Best wishes.


Yogesh Singh



शुभकामना संदेश

जानकर प्रसन्नता हुई कि प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी अपनी 15वीं वर्षगांठ मना रही है। इससे भी अच्छी बात यह है कि विगत 15 वर्षों में सोसाइटी की जो भी गतिविधियाँ व उपलब्धियाँ रही हैं, उनको दस्तावेज़ का रूप देने का निर्णय लिया गया। विदुषी उमा गर्ग विशेष रूप से सराहना की पात्र हैं क्योंकि स्मारिका भावी पीढ़ी के कलाकारों और अध्येताओं के काम आएगी।

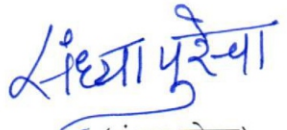
विदुषी उमा गर्ग स्वयं विलक्षण शास्त्रीय गायिका हैं। उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी मिल चुका है। दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत संकाय और विभाग की अध्यक्ष रह चुकी हैं। अतः उनके निर्देशन में प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी के कार्यों और गतिविधियों की गुणवत्ता और स्तरीयता सदैव ही उच्च कोटि की रही है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, श्रीमती गर्ग ने पिछले पन्द्रह वर्षों की अवधि में प्रवाह के बैनर तल न केवल शास्त्रीय संगीत, वरन् लोक संगीत को भी पर्याप्त महत्व एवं सम्मान प्रदान किया है।

सांस्कृतिक चेतना के विकास और विस्तार के लिए आपके प्रयास अनुकरणीय रहे हैं। प्रवाह के माध्यम से कार्यशालाओं एवं सांगीतिक कार्यक्रमों के आयोजन ने न केवल कला रसिकों एवं कला मर्मजों को सांस्कृतिक पोषण प्रदान किया है, अपितु छात्र-छात्राओं को विशेष रूप से आकर्षित किया है।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु विश्वास है कि यह स्मारिका अपने उद्देश्यों में पूर्णतः सफल होगी। मैं कामना करती हूँ कि प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी निरंतर क्रियाशील रहे और भारतीय कला एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन में अपना योगदान इसी प्रकार देती रहे। मैं विशेष रूप से विदुषी उमा गर्ग को बधाई देती हूँ।

सोसाइटी से जुड़े सभी कलाकारों को अशेष शुभकामनाएँ एवं हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित


(संध्या पुरेचा)



FACULTY OF MUSIC & FINE ARTS
University of Delhi

Prof. Rajeev Verma
Dean & Head

Mob. : 9891235469, 9810156599
E-mail : deanmusicdepartment@gmail.com
head@mfa.du.ac.in
rajiv.verma523@gmail.com
rajeev_sitar@yahoo.com

विदुषी प्रोफेसर डॉ. उमा गर्ग जी को मैं काफी समय से जानता हूं और उनका कार्य एक कलाकार एवं शिक्षिका के रूप में अत्यंत प्रशंसनीय रहा है। अपने कार्यकाल में उन्होंने प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी की स्थापना की, जिसमें अनेक नवोदित युवा कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त हुआ तथा स्वयं मैंने भी प्रवाह के मंच पर दो बार सितार वादन की प्रस्तुति दी है। यह उनके संगीत के प्रति समर्पण और सेवा भाव का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी के 15 वर्ष सफलतापूर्वक संपूर्ण होने पर मैं उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं। मेरी कामना है कि वे आगे भी संगीत सेवा में समर्पित रहें और अपनी प्रतिभा से समाज को लाभान्वित करती रहें।

Rajeev Verma
Dean and Head
Dept. of Music
Faculty of Music and Fine Arts
University of Delhi
Delhi-110007

Faculty of Music & Fine Arts, University Road, University of Delhi, Delhi - 110007
Website : www.music.du.ac.in

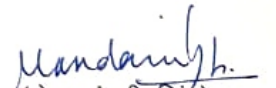


दिनांक : 27 जून, 2025

शुभकामना— संदेश

हर्ष का विषय है कि विदुषी प्रो० उमा गर्ग विगत 15 वर्षों से "प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी" के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत और सांस्कृतिक चेतना के प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन हेतु कार्यरत हैं। समय-समय पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कार्यशालाएं भी इस संस्था के माध्यम से आयोजित की जाती हैं। संस्था की सांस्कृतिक एवं सांगीतिक गतिविधियों में अनेक छात्र-छात्राएं प्रतिभाग करके लाभान्वित होते रहे हैं।

वर्ष 2025 में "प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी" अपनी 15वीं वर्षगांठ मना रही है, जिसके उपलक्ष्य में प्रकाशित की जा रही स्मारिका में सांगीतिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां समाहित हैं। यह स्मारिका संगीत के छात्र-छात्राओं एवं कलाकारों को प्रोत्साहित करेगा। मैं इस स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।


(प्रो० मांडवी सिंह)

प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी की कार्यकारिणी समिति

संस्थापक एवं अध्यक्ष

विदुषी प्रो० उमा गर्ग

उपाध्यक्ष

डॉ० श्रीमति पुष्पा सत्यशील

सचिव

श्रीमति कल्याणी घोष दस्तीदार

उप सचिव

डॉ० श्रीमति सुमिता चक्रवर्ती

डॉ० श्रीमति कमला ध्यानी

कोषाध्यक्ष

श्री इन्द्र स्वरूप शर्मा

सदस्य

डॉ० भगत सिंह

डॉ० श्रीमति उर्वी सरमा

डॉ० हरिनाथ झा

मीडिया संयोजक

डॉ० श्रीमति रिन्दाना रहस्या

डॉ० संतोष कुमार कश्यप



मैंने जब सोचा।



अपनी संगीत साधना के दौरान मुझे अनुभव हुआ कि समाज में एक कलाकार को आगे बढ़ने के लिए कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। घर से लेकर बाहर की दुनिया तक संघर्ष ही संघर्ष है। काबिलियत होते हुए भी कोई उसे आगे बढ़ाने के लिए हाथ नहीं बढ़ाता। यदि कलाकार कोई महिला हो तो मुश्किल और भी बढ़ जाती है। शास्त्रीय संगीत के लिए नियमित, कठिन साधना, समर्पण, त्याग तपस्या की आवश्यकता होती है। साथ में इस कठिन साधना, रियाज के लिए आपके पास गुरु का आशीर्वाद, निर्देशन आवश्यक है। जिससे सही व गलत का फर्क आपको पता रहे। कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन कहाँ करे, कैसे करे, उसे मंच

मिलना, श्रोताओं का प्यार मिलना, उसके लिए यह सब आसान नहीं होता। उसे ढेर सारी प्रक्रियाओं के दौर से गुजरना पड़ता है। लगातार सक्रिय रहना पड़ता है। वैसे आजकल इन सब के लिए ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती है। जमाना बदल गया है, लोगों की सोच बदल गई है। साधना के नाम पर Contacts, Youtube, WhatsApp, Facebook पर लोग ज्यादा मेहनत कर रहे हैं।

आवाज का लगाव, सुरीलापन, स्वर का निकास तथा सही मात्रा में एक ही पलटे को भिन्न-2 लय में बांधकर घंटों रियाज करना, तीन सप्तक की सपाट, इन सब चीजों को साधना आसान बात नहीं होती। पर छोड़िए ये बातें। करीब 50 साल पहले मैं जब इन सब चीजों से गुजर रही थी, कभी मंच आसानी से मिलता तो कभी कहीं पर मुश्किलें आतीं। उन्हीं दिनों मैंने अपने गुरुजी पंडित मणिप्रसाद जी से पूछा था, "ऐसा क्यों होता है कि किसी को इतना बड़ा मंच बिना संघर्ष के आसानी से मिल गया और मुझे नहीं? तो उन्होंने कहा था, "तुम ऐसे मत सोचो, संगीत साधना करती रहो। यह इबादत है। संगीत ईश्वर है। तुम इस नजर से साधना करती रहोगी तो तुम्हारे मन में कभी यह सवाल नहीं आएगा।" उस दिन से मैं और भी ज्यादा अपनी स्वर साधना में डूब गई।

समय का चक्र घूमता रहा। कार्यक्रमों की व्यस्तता बढ़ती गई तथा इसी समय संगीत संकाय दिल्ली विश्वविद्यालय में मेरी नियुक्ति हुई। इन दोनों कार्यों में तालमेल बिठाते हुए मैं आगे बढ़ती गई। मेरा जीवन कई उतार चढ़ाव से गुजरता हुआ मंज़िल की ओर बढ़ता रहा। अपने और परायों की पहचान हुई तभी प्रवाह का उदय हुआ। जैसे मेरे जीवन में एक नई सुबह हुई। 2010 में जब मैंने सोचना शुरू किया कि क्या नाम रखूं अपने संगठन का जिसके ज़रिए मैं संगीत और संगीत के कलाकारों की सेवा कर सकूँ। मन में आया कि वह संगीत संस्था जिसमें निरन्तर स्वरधारा बहती रहे। अनन्तकाल तक, देश के कलाकारों द्वारा, भारतीय संगीत प्रवाहित होता रहे, मुझे प्रवाह संगीत संस्था से अच्छा कोई दूसरा नाम नहीं सूझा।

प्रवाह म्यूज़िक सोसाइटी' संस्था का नामकरण होने के बाद मैंने अपने कुछ सहयोगी, मित्रों, और समर्थकों से इस विषय पर चर्चा की, उनका सुझाव और समर्थन प्राप्त किया। यहां पर एक नाम विशेष रूप से लेना चाहूंगी जिन्होंने मुझे मेरे इस विचार को न केवल समर्थन और सराहना की बल्कि इस संस्था को बनाने की संपूर्ण कार्यप्रणाली, रजिस्ट्री आदि के बारे में अवगत कराया और मेरी सहायता भी की वो नाम है प्रसिद्ध संगीत समीक्षक श्री रविन्द्र मिश्रा जी। इसके लिए मैं उन्हें बहुत साधुवाद देती हूं और हृदय से आभारी हूँ।

प्रवाह का एक प्रतीक चिन्ह (LOGO) मैंने डिजाइन किया जिसमें सूर्य के प्रकाश के साथ जलप्रवाहित होता दिखाई देता है जैसे कि स्वर संगीत जल की तरह प्रवाहित हो रहा है, यह संपूर्ण मेरी कल्पना थी। आज इस प्रवाह म्यूज़िक सोसाइटी को, संगीत प्रवाहित करते हुए पंद्रह वर्ष हो गये हैं जिसे देखकर मैं गद्गद हूँ, आनन्दित हूँ। मेरे साथ इन वर्षों में जिन लोगों का साथ मिला, सदस्यों के रूप में, मेरे शिष्य-शिष्यायें, मेरे मित्र एवं सहयोगी गण उन सबका मैं हृदय से आभार और धन्यवाद करती हूँ।

उमा गर्ग



Prawah @15 Years: A Journey of Excellence

By

Smt. Kalyani Ghosh Dastidar

Vidushi Prof. Uma Garg taught Indian Classical Music in Music and Fine Arts Faculty at Delhi University. She had always nurtured the dream of serving the noble cause of Indian Classical Music. Her vision was to seek out new and young talent, whom she could nurture to hone their skills and then give them an opportunity to showcase their talent. Also, the flagging popularity of Indian Classical Music was a cause of grave concern for her, a trend she wanted to reverse.

It was with these aims she founded the Prawah Music Society. The first program of this Society was organised at the residence of Vidushi Prof. Uma Garg in 2011, indeed a humble beginning. In 2015, after Vidushi Prof. Uma Garg retired from the Faculty of Music and Fine Arts at Delhi University, as its Dean and Head, she dedicated her life to fulfil the aims of Prawah Music Society. Since then, the Society has not only been at the forefront of honing rising talents but also in the realm of preserving and propagating the rich culture of Indian Classical Music.

In times, Prawah Music Society became a regular feature in the Cultural Calendar of Delhi. Its programmes became much awaited events, not only due to the richness and quality of the events but also due to the fact that music lovers were given free access to the event, helping Vidushi Prof. Uma Garg to fulfil her aims. Soon, many nascent and budding talents of Indian Classical Music joined the Society. For them, the Society organised music training sessions and workshops, to refine their talent. To enable them to understand the nuances and intricacies of various facets of Indian Classical Music and its presentation on stage, Vidushi Prof. Uma Garg invited leading exponents of Indian Classical Music to perform. In doing so the budding talents gained in knowledge, Prawah Music Society gained popularity and audience was given a memorable bouquet of rich and enthralling music filled evening, increasing the acceptance and admiration for Indian Classical Music.



Today, Prawah Music Society is at the cusp of completing 15 years. It has through the untiring efforts of Vidushi Prof. Uma Garg overcome many ups and downs, the most challenging being the times of Covid pandemic, during which Indian Classical Music lost many famous exponents but Vidushi Prof. Uma Garg kept her Society and its members safe and active through many 'online' programmes ,which was like a whiff of new life during the dreaded lockdown , giving 'hope' to many artists and to the audiences who watched it "online." In doing so the stature of Vidushi Prof. Uma Garg grew taller in the world of Indian Classical Music and her brainchild, our beloved Prawah Music Society, gained in strength and in fame. Though success of Prawah Music Society is due to the diligence and hard work of Vidushi Prof. Uma Garg but credit also goes to our associates, musicians, well- wishers and audiences, who have supported us in this journey since 2011. Vidushi Prof. Uma Garg and Prawah Music Society express deep gratitude to everyone for sharing our love for music and inspiring us to move forward in our quest to enrich and popularise Indian Classical Music.

Jai Hind!

Smt. Kalyani Ghosh Dastidar
Secretary, Prawah Music Society.



PRAWAH MUSIC SOCIETY



This society was in the mind and imagination of Vidushi Dr. Uma Garg at a time when she herself was a student and was struggling for becoming an artist, and when she was trying to accomplish supremacy in vocal music. She used to think to organise something to the extent that it would help the upcoming students and artists. She wanted to provide some kind of assistance so that the new students and upcoming artists may not wander here and there and their capabilities may be developed and brought out in the forefront through the medium of a society.

With this object in her mind and with the assistance and their valuable suggestions of a few well -wishers, Prawah Music Society came into existence in the year 2010.

“Prawah” denotes a smooth flow of water or river or of thoughts or any other variant. Sangeet (a combination of Dance, Vocal and Instrumental Music) has been flowing like a river from “Anadi Kal” (long time, may be beginning of the world) and is taking different shapes and is moving in different directions with the sole purpose of progress and development.

With this name in her mind, Vidushi Dr. Uma Garg proceeded towards the formation of this society. She invited a few students, teachers, artists, and members of the society for discussions and their valuable suggestions. She prepared an outline for the society and the initial work was deputed to the relevant people.

Prof. Uma Garg had already realised that there are many societies which were already existent for the development and progress of music but the facilities are made available only to the well known and well established artists. She felt that upcoming artists should also be promoted and given a chance to show their capabilities to the public and thus they would be able to establish themselves in the field of Music.

With this viewpoint in mind the Prawah Music Society put forth its aims and objectives, which are applicable not only for Sangeet but other fine arts as well. The aims and objectives are defined as under :--

1. To carry over the heritage of our Indian Classical Music to our next generation.
2. To provide platform to new and upcoming artists.
3. To establish a dialogue between upcoming artists and virtuosos of music .
4. To arrange facilities for students of different age groups, to learn music from capable and learned Gurus.
5. To invite the upcoming artists for further progress of Music.
6. To invite Virtuoso artists for performance from time to time.
7. To develop harmony and world brotherhood through the divine qualities of Art
8. To select talented students and try to provide facilities in developing their inborn capabilities as regards to Music.
9. To provide music programmes whenever invited by different organisations.

With these aims and objectives “Prawah Music Society” was registered on 12th January 2011 with Vidushi Dr. Uma Garg as the President.

In the list of music festivals and programmes which are being organised in Delhi, now another feature has been added under the name “Prawah Music Society”. In a few years the society is being recognised and has made an important place in the category of such institutions which are immersed constantly in the betterment and improvement of Music. With the efforts of Prof. Uma Garg and her team, her long cherished dream of providing a stage to young and budding artists, is almost being fulfilled.



Its really praiseworthy how she was able to give her valuable time for the society even when she was the Dean of Faculty of Music and Fine arts. She has made all the possible effort to nurture and bring up this society to this level of recognition and fame.

Dr. Pushpa Satyasheil
Vice-President Prawah Music Society











PRAWAH IN MY MEMORIES



Prawah Music Society is completing 15 years of successful service to the field of Music and performing arts. This milestone signifies, commitment and dedication of the founder members of the society. I feel blessed to get the opportunity to congratulate my guruma Vidushi Uma Gargji ,the Founder and President of Prawah along with the other respected members of this Society.

Today I have only memories of Prawah to share with you. I was also a very active member of the society and it makes me always feel very proud that Guru Maa gave me such an accountability at the time. I feel incredibly fortunate to have Guru Maa in my life as my guru, guide and above all as a guardian. I have grown by what I have learnt from her.

I still remember the time when Guru Maa was deciding the name and logo for this society, working so hard for the registration of the society. It was her hard work ,dedication and sacrifices that give Prawah Music Society a lift to such a prestigious level. The first program of Prawah Music Society was organised at Guruma's own residence. Though at that time, society was in its grassroots level I remember how warmly guruma felicitated the artists and welcomed the guests. Gradually with the help of sponsorships and donations we have started organising grand events. I have learnt a lot while working with Prawah Music Society. Guruma's belief upon us inspires a lot to do all types of works with confidence. As I was the secretary of Prawah, the responsibility of organising the events was on my should With the guidance of Guru Maa and support of the fellow members I used to manage everything properly. After every event Guru Maa used to take us (students and members) for a feast. That was her sweet gesture to appreciate and encourage our spirit. Lots of memories are coming to my mind like flashback at this moment, but I need to give it a pause here. I would like to thank all the respected members of Prawah Music Society for giving me so much love and good memories with them.

My best wishes for the continued growth and success of Prawah Music Society. May the Society flourish and continue enriching the cultural landscape with its vibrant performances.

Dr. Urbee Sarma
Member,
Prawah Music Society.

Breaking Barriers: The Economics of Cultural Inheritance in Hindustani Classical Music

By Mallika Pung



Introduction

As a young girl, I would often sit cross-legged on the floor of our living room, watching my mother, Vidushi Uma Garg, do her riyaz for hours, while I completed my schoolwork. The dedication was evident every day, whether it was early in the morning before dawn or late at night. What wasn't visible to the casual observer were the additional hours, the extra obstacles, and the systemic barriers she faced as someone without a traditional Musical lineage in Hindustani classical music.

As her daughter who grew up to become an economist, I've had a unique perspective on both the personal struggles and the institutional barriers my mother navigated. Her journey from an outsider to an established, respected, and oft revered vocalist, and now the founder of Prawah Music Society, offers valuable insights into the economics of cultural capital and how grassroots organizations can transform artistic ecosystems.

Economic Barriers in Classical Arts – The Guild System of Gharanas

The Hindustani classical music world my mother entered functions much like a hereditary guild system. The gharana tradition, while invaluable for preserving artistic lineages, has effectively created a world where family connections determine access to critical resources: knowledge, mentorship, and performance opportunities.

For musicians like my mother without established family names in music, the journey involves tangible disadvantages at every turn. She was fortunate to find a dedicated guru willing to mentor her, but he too existed outside the circle of "established" musical families and faced similar struggles for recognition despite his considerable talent. This created a parallel ecosystem where gifted musicians without the right familial connections formed their own networks of mutual support yet collectively remained marginalized from the mainstream classical music establishment. While this alternative system provided crucial mentorship and encouragement, it couldn't fully compensate for the advantages that established lineages automatically conferred.

The barriers weren't just about training but extended to performance opportunities. Concert organizers and established musicians would assess artists based on family reputation before even hearing them perform. I remember the countless letters my mother wrote seeking opportunities to perform, while watching contemporaries from established musical families receive invitations effortlessly. Each rejection represented not just an emotional setback but a tangible economic loss - time and resources invested without generating the connections and visibility that would fuel future opportunities.

Lineage as Cultural and Economic Capital

In economics, we study how non-monetary assets like reputation and connections function as capital that generates economic returns. In Hindustani classical Music, family lineage operates as a form of capital that generates cumulative advantages over time where each performance opportunity amplifies future prospects, reinforcing existing disparities.

For artists like my mother who lacked this initial capital, each missed opportunity compounded the losses - foregone income, connections, and recognition that would have generated future returns. The opportunity cost was substantial: she had to abandon her established success in light music and semi- classical forms to prove herself in the more demanding classical arena. The years she spent seeking a foothold in the classical music community represented a substantial investment with delayed returns. While her peers performed at major festivals and secured long-term discipleship with maestros, my mother spent those same hours writing letters, requesting meetings, and waiting for funded performances. The cost wasn't only financial, it was compounded career time lost, similar to a professional being repeatedly denied entry into a growth sector while peers scaled rapidly. Even after establishing her artistic credentials, the economic value of her musical human capital consistently yielded lower returns than peers who started with inherited advantages.

As a labor economist, I recognize my mother's experience as a textbook case of market imperfection and asymmetric information - where talent is inefficiently allocated because evaluators use family lineage as a proxy for quality in the absence of perfect information. Her struggle wasn't simply personal; it reflected inefficiencies in how the 'market' for classical musicians functions when non- meritocratic factors influence who receives opportunities.

The Role of Grassroots Institutions

This background makes the founding of Prawah Music Society 15 years ago not just a personal triumph but an important economic intervention. The story of Prawah's

inception itself illustrates the economic barriers at play – my mother hosted the very first concert in our home because securing a formal concert venue required substantial funds that weren't available. What began in our living room out of necessity has grown into an organization that has had transformative effects on many careers.

The financial reality of classical music in India creates additional challenges. Concerts typically must be free, as audiences are generally unwilling to pay to attend classical performances. This means the payment to artists and their accompanists initially came directly from my mother's own pocket. Even today, Prawah operates as a non-profit, sustained through donations and membership dues from supporters who are often students and modestly paid artists themselves, a stark contrast to earlier eras when wealthy patrons and royal courts provided substantial financial backing for classical musicians.

Hindustani Classical Music also exemplifies what economists call "Baumol's cost disease" - the challenge faced by performing arts where costs rise faster than in other sectors because artistic productivity cannot be improved the way manufacturing or technology can. Since the time and skill required to perform a raga remains constant while other fields become more efficient, artists increasingly depend on institutional support to remain economically viable.

Despite these financial constraints, grassroots cultural organizations like Prawah create value that extends far beyond cultural preservation - they actively restructure opportunities within the Hindustani Classical Music ecosystem. By providing performance platforms specifically for emerging artists without established connections, Prawah has effectively lowered entry barriers and created a more dynamic "marketplace" for classical music. Each concert series, each featured artist, represents not just a cultural contribution but a restructuring of the opportunity landscape, creating visibility, networking opportunities, and professional credentials for those who would otherwise remain on the margins.

Positive Externalities in Cultural Economics

Prawah's work addresses market failures in the cultural sector. When market mechanisms fail, as they do when factors unrelated to talent determine access to opportunities, resources aren't allocated to their highest-value use, creating both equity and efficiency problems. By connecting talented musicians with audiences regardless of their background, Prawah helps correct these inefficiencies, despite operating with extremely limited financial resources.

The organization also generates significant positive externalities, i.e., benefits that extend beyond the immediate transaction between performers and audiences. When an emerging artist receives their first platform through Prawah, the value created extends well beyond that single performance. Future audiences will enjoy their art, students may later learn from them, and the broader cultural ecosystem benefits from increased diversity of expression. These positive spillover effects aren't captured in any balance sheet but represent real economic and cultural value. Just as economists recognize that education creates benefits beyond the educated individual, organizations like Prawah create cultural and economic ripples that benefit the broader society.

My mother's creation of Prawah didn't just benefit the wider music community; it deeply influenced my own relationship with talent and opportunity. Her experience in the classical Music world shaped how I would think about my skills and career path. Her journey breaking through in a legacy-dominated field gave me an unexpected gift: a clearer understanding of where my true strengths lie and the freedom to pursue them elsewhere.

Intergenerational Human Capital Allocation

Watching my mother's journey profoundly shaped my own career path. Despite growing up immersed in classical music, I made a conscious decision not to follow in her footsteps. Having witnessed her struggles firsthand, I recognized that the networking demands and self-promotion essential to success in classical music didn't align with my strengths. After careful reflection, I concluded that investing my efforts in economics would better suit both my abilities and temperament. Her persistence in breaking barriers paradoxically gave me the clarity to choose a different direction entirely.

By the time I reached adulthood, my mother had established herself, meaning I would have had the very "family connection" advantage that she lacked. The path would have been considerably easier for me than it was for her. Yet this presented its own economic inefficiency – I knew I wasn't as musically gifted as many others in the field. Pursuing music would have meant displacing more musically gifted artists, simply by virtue of my inherited advantage. Meanwhile, my analytical aptitude would remain underutilized, representing a dual inefficiency in talent allocation.

This reflects a broader inefficiency in the classical arts ecosystem. Many children of established musicians choose music not because of exceptional talent but because it's the path of least resistance. They inherit opportunities that might create better social value if allocated to more gifted performers. Meanwhile, their own talents might be better

applied in fields where they have comparative advantage. Society loses twice: we miss out on music from gifted artists without connections, while also losing what these ‘legacy musicians’ could have contributed to fields better matching their true talents.

My mother’s struggle to break into a system based on family connections gave me the freedom to pursue my own comparative advantage rather than feeling obligated to follow a predetermined path. In economic terms, this allowed for a more efficient allocation of human capital: she excelled where her talents lay, and I was empowered to do the same in my chosen profession.

Conclusion: Towards a More Meritocratic Ecosystem

As Prawah Music Society celebrates its 15th anniversary, I see it as both a testament to my mother’s perseverance and a sophisticated economic intervention in the cultural landscape. What began as a modest gathering in our family living room, born from necessity and my mother’s determination, has evolved into an institution that is gradually transforming the opportunity structure within Hindustani classical music.

The journey from hosting concerts at home and personally funding artists’ payments to establishing a recognized organization speaks volumes about both the challenges facing classical arts and my mother’s unwavering commitment to her vision. That Prawah continues to thrive on modest membership fees and donations from people who themselves have limited resources is a remarkable achievement in cultural economics.



Prawah demonstrates that cultural preservation and economic innovation need not be at odds. By democratizing access to audiences and recognition, my mother has ensured that the next generation of classical musicians will increasingly be selected more by their talent than their surnames, creating both a more just and a more vibrant future for the art form she loves.





प्रवाह म्यूज़िक सोसाइटी : स्वर साधना के 15 वर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत की अद्भुत धरोहर को संजोए रखने और उसके प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए “प्रवाह म्यूज़िक सोसाइटी” इस वर्ष 15 वर्ष का सफर पूरा कर रही है। यह एक ऐसा अवसर है जब हम भारतीय संगीत के प्रवाह व चेतना को जाग्रत करने वाले उसके नाद को न केवल महसूस करें, बिल्क इसका उत्तरदायित्व भली-भाँति समझें।

भारतीय शास्त्रीय संगीत को नई पीढ़ी के सामने लाने और उसकी विशेषताओं को उजागर करने के उद्देश्य से 2011 में प्रवाह म्यूज़िक सोसाइटी की स्थापना की गई थी। वैदिक युग से आज तक निरन्तर प्रवाहमान गुण को ध्यान में रखते हुए इसका नाम प्रवाह म्यूज़िक सोसाइटी रखा गया। इसी उद्देश्य के लिए हमने भारतीय शास्त्रीय संगीत के सभी विधाओं के कार्यक्रम आयोजित किए। ख्याल गायकी ध्रुपद धमार, ठुमरी टप्पा, दादरा आदि। इसके अलावा भविष्य में सुगम संगीत की विधाओं जैसे गीत गजल भजन को भी कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचार करने का विचार रखते हैं। साथ ही कार्यशाला और शिक्षण की व्यवस्था भी चल रही है।

15 वर्ष में प्रवाह म्यूज़िक सोसाइटी ने सैकड़ों संगीत रसिकों को जोड़ने का कार्य किया है। युवा संगीतकारों की नई पीढ़ी को प्रमोट करने में यह सोसाइटी अग्रणी रही है। हमने उभरते हुए कलाकारों को अपने सपनों को साकार करने का अवसर प्रदान किया है। हमें गर्व है कि आज कई सदस्य हमारे बीच हैं, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं।

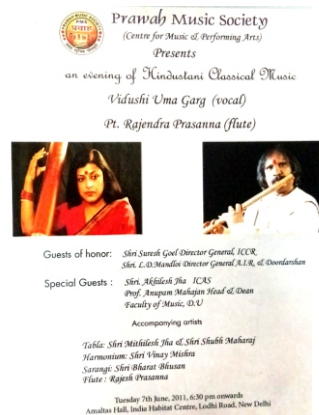
हमारे संस्थान की उपलब्धियों का श्रेय हमारे सहयोगियों, संगीतकारों, और शुभचिंतकों को जाता है, जिन्होंने इस यात्रा में हमें समर्थन दिया। हम सभी को हमारे संगीत प्रेम को साझा करने के लिए धन्यवाद करते हैं, और इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।



इन 15 वर्षों में जिन कलाकारों ने हमारे कार्यक्रमों में भाग लिया 2011-2025 तक का क्रमानुसार विवरण इस प्रकार है -

7th Jun 2011, Amaltas Hall, India Habitat Centre

Vidushi Uma Garg	Vocal
Pt. Rajendra Prasanna	Flute
Pt. Mithlesh Jha	Tabla
Pt. Shubh Maharaj	Tabla
Vinay Mishra	Harmonium
Pt. Bharat Bhushan	Sarangi
Sh. Rajesh Prasanna	Flute



Special Guest

Sh. Suresh Goel, Director General ICCR
Sh. L.D Mandloi Director General A.I.R & Doordarshan

16th Nov 2011 Gandhi Bhawan Delhi University

Sh. Bhagat Singh	Vocal
Dr. Rajeev Verma	Sitar
Dr. Shailendra Goswami	Vocal
Sh. Sukanta Bajpayee	Tabla
Sh. Abhay Kumar Rai	Tabla
Sh. Rashid Zafar	Tabla
Sh. Ravindra Pratap Singh	Harmonium
Sh. Shailendra Kumar	Harmonium



14th Dec 2011 Amaltas Hall-India Habitat Centre

Pt. Somnath Mukhopadhyay	Tabla Solo
Sh. Ranju Biswas	Harmonium
Vidushi Manju Mehta	Sitar
Pt. Sudhir Pandey	Tabla



Chief Guest :

Sh. Laxmi Shankar Bajpai Eminent Poet and Station Director A.I.R Delhi

Guest of Honour :

Padma Bhushan Pt. Debu Chaudhary Renowned Sitar Maestro

8th Aug 2012, Amaltas Hall, India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi

Ustad Saeed Zafar Khan	Sitar
Sh. Rashid Zafar Khan	Tabla
Vidushi Savita Devi	Vocal
Ustad Akhtar Hussan	Tabla
Sh. Badlu Khan.	Harmonium
Sh. Kamal Ahmed	Sarangi

Chief Guest :

Vidushi Shanno Khurana Renowned Vocalist

Guest of honour :

Sh. A.M. Rao Asst. Director Programme Doordarshan

Prawah Music Society
(Centre for Music & Performing Arts)
Presents
an evening of Hindustani Classical Music

Ustad Saeed Zafar Khan (Sitar)
Vidushi Savita Devi (Vocal)




Chief Guest : Vidushi Shanno Khurana (Renowned Vocalist)
Guest of honour : Sri A.M. Rao (Asst. Director Programmes) Doordarshan

Accompanying Artist
Tabla : Ustad Akhtar Hussan, Sri Rashid Zafar Khan
Harmonium : Sri Badlu Khan
Sarangi : Sri Kamal Ahmed

Wednesday 8th August 2012 6.30 P.M. onwards
Amaltas Hall, India Habitat Centre,
Lodhi Road, New Delhi

Contact: Prawah Music Society
09891590413, 09868204213, 09910400131
email: umagarg99@gmail.com

12th Jan 2013 Amaltas Hall, India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi

Sh. Shailendra Kumar	Vocal
Sh. Sukanta Bajpayee	Tabla
Sh. Shekhar	Harmonium
Sh. Gopal Krishna Shah	Sitar
Sh. Rishitosh Kumar	Tabla
Pt Dalchand Sharma	Pakhawaj

Chief Guest




Pandit Bhajan Sopori Renowned Santoor Maestro

Guest of honour:

Vidushi Smt. Krishna Bisht Hindustani Classical Vocalist

Prawah Music Society
(Centre for Music & Performing Arts)
Presents
an evening of Hindustani Classical Music

Sri Shailendra Kumar (Vocal)
Sri Gopal Krishna Shah (Sitar)
Pt. Nirmalya Dey (Vocal Dhrupad)

Chief Guest : Pandit Bhajan Sopori (Renowned Santoor Maestro)
Guest of honour : Vidushi Smt. Krishna Bisht (Hindustani Classical Vocalist)

Accompanying Artist
Pakhawaj : Pt. Dalchand Sharma
Tabla : Sri. Rishitosh Kumar, Sri. Sukanta Bajpayee
Harmonium : Sri Shekhar

Saturday 12th January 2013 6.30 P.M. onwards
Amaltas Hall, India Habitat Centre,
Lodhi Road, New Delhi

19th Jul 2013 Stein Auditorium, India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi

Pt. Biswajit Roy Chowdhury	Sarod
Ustad Akram Khan	Tabla
Pt. Vidyadhar Vyas	Vocal
Ustad Akhtar Hasan	Tabla

Chief Guest:

Sh. Suresh K. Goel Director General ICCR

Guest of honour:

Smt. Shanta Serbjeet Singh Vice-Chairman, Sangeet Natak Akademi

Prawah Music Society
(Centre for Music & Performing Arts)
Presents
an evening of Hindustani Classical Music

Pt. Biswajit Roy Chowdhury (Sarod)
Ustad Akram Khan (Tabla)

Pt. Vidyadhar Vyas (Vocal)
Ustad Akhtar Hasan (Tabla)






Chief Guest : Shri Suresh K. Goel
Director General ICCR

Guest of honour : Smt. Shanta Serbjeet Singh
(Vice-Chairman, Sangeet Natak Akademi)

Friday 19th July 2013 7.00 P.M.
Stein Auditorium, India Habitat Centre,
Lodhi Road, New Delhi

Contact: Prawah Music Society
09891590413, 09868204213
email: umagarg99@gmail.com

**29th Mar 2014, Amaltas Hall, India Habitat Centre,
Lodhi Road, New Delhi**

Sh. Smit Tiwari	Sarod
Sh. Sukanta Bajpaye	Tabla
Padmashri Shanti Hiranand	Vocal Semi Classical
Sh. Nawab Ali	Tabla
Sh. Ghulam Ali	Sarangi

Chief Guest:

Sh. S.K. Agarwal

Guest of honour: President of S.G. Chandra Foundation

Smt. Sindhu Mishra Deputy Secretary, Sahitya Kala Parishad

Prawah Music Society
(Centre for Music & Performing Arts)

Presents
an evening of Hindustani Music

Shri Smit Tiwari (Sarod)
Shri Sukanta Bajpaye (Tabla)

Padmashri Shanti Hiranand (Vocal)
Shri Nawab Ali (Tabla)
Shri Ghulam Ali (Sarangi)

Chief Guest : Shri S.K. Agarwal
President of S.G. Chandra Foundation

Guest of honour : Smt. Sindhu Mishra
Deputy Secretary, Sahitya Kala Parishad

Saturday 29th March 2014, 6.30 P.M.
Amaltas Hall, India Habitat Centre,
Lodhi Road, New Delhi

Contact: Prawah Music Society
09810015797, 09868204213
email: umagarg99@gmail.com

**15th Dec 2014 Stein Auditorium, India
Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi**

Smt. Kamla Dhyani	Santoor
Dr. Bipul Kumar Ray	Vocal
Dr. Rishitosh Kumar	Tabla
Pt. Harish Tiwari	Vocal
Sh. Shanti Bhushan Jha	Tabla
Sh. Zakir Dholpuri	Harmonium

Chief Guest:

Smt. Helen Acharya Secretary. Sangeet Natak Akademy

Guest of honour:

Dr. Smt. Renu Batra Joint sec. UGC

Prawah Music Society
(Centre for Music & Performing Arts)

Presents
an evening of Hindustani Classical Music

Smt. Kamla Dhyani (Vocal)
Dr. Bipul Kumar Ray (Santoor)
Sri Shanti Bhushan Jha (Tabla)

Pt. Harish Tiwari (Vocal)
Kirana Gharana
Dr. Rishitosh Kumar (Tabla)
Sri Zakir Dholpuri (Harmonium)

Chief Guest : Smt. Helen Acharya Secretary, Sangeet Natak Akademy

Guest of honour : Dr. (Mrs.) Renu Batra (Joint sec. UGC)

Monday 15th December 2014 6.30 P.M.
Stein Auditorium, India Habitat Centre,
Lodhi Road, New Delhi

Contact: Prawah Music Society
09810015797, 09868204213
email: umagarg99@gmail.com

**7th Nov 2015, Amaltas Hall, India Habitat
Centre, Lodhi Road, New Delhi**

Ustad Asgar Hussain	Violin
Ustad Akhtar Hasan	Tabla
Ustad F. Wasifuddin Dagar	Vocal
Pandit Mohan Shyam	Pakhawaj
Pt. Prateek Chaudhuri	Sitar
Sh. Abhishek Mishra	Tabla

**Chief Guest: Dr. Sudha Misra DDG Music, AIR New
Delhi-110001**

Prawah Music Society
(Centre for Music & Performing Arts)

presents
an evening of Hindustani Music

Ustad Asghar Hussain (Violin)
Ustad Akhtar Hasan (Tabla)

Ustad F. Wasifuddin Dagar (Vocal)
Pandit Mohan Shyam (Pakhawaj)

Pandit Prateek Chaudhuri (Sitar)
Shri Abhishek Mishra (Tabla)

Chief Guest : Dr. Sudha Misra
DDG Music, AIR New Delhi-110001

Saturday 7th November 2015, 6.30 P.M.
Amaltas Hall, India Habitat Centre,
Lodhi Road, New Delhi

R.S.V.P.: Prawah Music Society
09810015797, 09868204213
email: umagarg99@gmail.com

**27th & 28th Jun 2016 onwards Stein Auditorium,
India Habitat Centre, Lodhi Road, Ners Delhi.**

Two day festival of hindustani Music

Vidushi Uma Garg	Vocal
Pt. Anup Ghosh	Tabla
Sh. Zakir Dholpuri	Harmonium
Pandit Bhajan Sopori	Santoor
Ustad Akram Khan	Tabla
Sh. Rishi Shankar Upadhyay	Pakhawaj
Smt. Veethika Tikoo	Santoor

Tuesday, 28th Jun, 2016

Vidushi Anupriya	Violin
Ustad Akhtar Hasan	Tabla
Ustad Iqbal Ahmad Khan	Vocal
Baber Latif Khan.	Tabla
Sh. Zakir Dholpuri	Harmonium

Chief Guest:

Dr. Sachidanand Joshi, Member Secretary, IGNCA

Guest of honours:

Smt. Deepa Chandra Additional Director General.

Doordarshan Vidushi Shanno Khurana

Prof. Vidushi Krishna Bisht



6th Apr 2017, Amaltas Hall, India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi

Sh. Vivek Prajapati	Vocal
Sh. Baber Latif Khan	Tabla
Sh. Zakir Dholpuri	Harmonium
Sh. Ranjan Kumar	Indian Slide Guitar
Sh. Sukanta Debnath	Tabla
Pandit Sarathi Chatterjee & Saptak Chatterjee	Vocal
Pt. Mithilesh Jha	Tabla
Dr. Vinay Mishra	Harmonium

Chief Guest :

Sh. M.L. Srivastava Joint Secretary, Ministry of Culture

Guest of Honour:

Internationally renowned Kathak Duo Nalini Kamalini Chairperson Kathak Kendra



**23th Feb 2018, Amaltas Hall, India Habitat Centre,
Lodhi Road, New Delhi**
An evening of Hindustani Classical Music
Collaboration with India Habitat Centre



Vidushi Shobha Chaudhary	Vocal
Pt. Subhash Kanti Das	Tabla
Sh. Zakir Dholpuri	Harmonium
Vidushi Manju Nandan Mehta	Sitar
Pt. Ashish Sen Gupta	Tabla

**29 & 30 Nov 2018, a two day Music Festival Titled " The Form of
Thumri & Tappa in Hindustani Classical Music "**
Triveni Kala Sangam Tansen Marg, New Delhi

29th Nov 2018 :

Smt . Shaswati Mandal	Vocal
Pt . Ashis Sengupta	Tabla
Vidushi Shanno Khurana.	Vocal
Ustad Akhtar Hasan.	Tabla
Dr . Vinay Mishra.	Harmonium

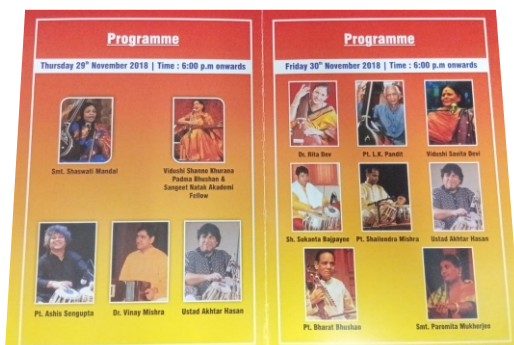
Chief Guest : Pt. Bhajan Sopori

Guest of honour : Vidushi Pro. Krishna Bisht, Vidushi Prof. Rita Ganguli



30th Nov 2018 :

Dr. Rita Dev	Vocal
Sukanta Bajpayee	Tabla
Pt. L. K. Pandit.	Vocal
Pt. Shailendra Mishra	Tabla
Pt . Bharat Bhushan	Sarangi
Vidushi Savita Devi	Vocal
Smt . Paromita Mukherjee	Harmonium
Ustad Akhtar Hasan	Tabla



23th Nov Saturday 2019, Triveni Kala Sangam, Tansen Marg, New Delhi Dhrupad & Khayal Gayaki

Pandit Naresh Malhotra	Vocal
Pt. Prashant Mallick &	Dhrupad
Pt. Nishant Mallick	
Vidushi Uma Garg	Vocal
Ustad Wasifuddin Dagar	Dhrupad
Chief Guest : Dr. Bharat Gupt	
Guest of Honour :	
Sh. Ashok Pradhan, Director BVB Dathi Kendra.	



2020 में कोविड के आगमन से संपूर्ण विश्व में हाहाकार मच गया। 2021 तक मानव जीवन आस्तव्यस्त रहा। साल के अंत तक धीरे-2 जीवन में फिर से स्वाभाविक गतिविधियां आरम्भ हुई। लोगों का ऑनलाइन मिलना जुलना व बातचीत करना आरम्भ हुआ। हमने भी ऑनलाइन 2022 में कई कार्यक्रम किए जो इस प्रकार हैं।



6th Feb 2022, Prawah Music Society Facebook Page

Dr. Avinash Kumar	Vocal
Sh. Roman Khan	
Sh. Manish Kumar Singh	Harmonium



12th Mar 2022, Prawah Music Society Facebook Page

Dr. Ranjan kumar	Monan Veena
Sh. Anuj Verma	Tabla



28th May 2022, Prawah Music Society Facebook Page

Dr. Santosh Kumar Kashyap	Vocal
Sh. Pareminder Singh	Tabla
Sh. Omkar	Harmonium

24th Nov 2022, Amaltas Hall, India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi

Dr. Sumita Chakraborty	Sitar
Padmabhushan Pt. Gokulotsav Ji Maharaj	Vocal
Sh. Ghulam Waris	Tabla
Ustad Akhtar Hasan.	Tabla
Sh. Zakair Dholpuri	Harmonium

Chief Guest: Prof. Alka Nagpal Dean & Head Faculty
Smt. Veena Pahari Former Asst. Director AIR
Prof. Ravi Sharma Former Dean & Head M.D University

29th Mar 2023, Triveni Kala Sangam, Tansen Marg, New Delhi

Dedicated to Late Pandit Mani Prasad Guru Ji

Pandit Santosh Nahar	Violin
Pandit Anup Ghosh	Tabla
Vidushi Uma Garg.	Vocal
Ustad Akhtar Hasan	Tabla
Ustad Saeed Zafar Khan	Sitar
Sh. Babar Latif khan	Tabla

Chief Guest :
Dr. Bharat Gupt, Executive Trustee IGNC A Delhi.
Guest of Honour:
Ustad Wasifuddin Dagar, Padma Shri Awardee.
Compere: Pandit Vijay Shankar Mishra

22th Sep 2023, Lok Kala Manch Lodhi Road , New Delhi

Master Kabir Gupta	Flute
Sh. Sukant Krishna	Tabla
Pandit Suresh Gandharv	Vocal
Ustad Akhtar Hasan	Tabla
Pt. Prof. Rajeev Verma	Sitar
Ustad Rashid Zafar	Tabla
Ustad Zakir Dholpuri	Harmonium

Compere: Dr. Rindana Rahasya

18th & 19th Jul 2024, Two days Festival, Amaltas Hall-India Habitat

Centre Lodhi Road , New Delhi 18th July 2024

Dr. Rindana Rahasya	Vocal
Sh. Sagar Gujrati	Tabla
Sh. Zakir Dholpuri	Harmonium
Dr. Chandrima Majumdar	Sarod
Ustad Akhtar Hasan	Tabla

Chief Guest : Sh. Leeladhar Mandloi Former

Director General - Prasar Bharti Delhi

Guest of Honour :

Sh. Ravindra Mishra , Senior Music Critic

Compere - Ms . Tulja Sharma

19th Jul 2024

Pt. Bholanath Mishra	Vocal
Pt. Sukanta Bajpayee	Tabla
Sh. Tanish Dholpuri	Sarangi
Sh. Zakir Dholpuri	Harmonium
Pt. Abhay Rustum Sopori	Santoor
Pt. Durjay Bhaumik	Tabla
Sh. Chand Singh	Tabla

Guest of Honour :

Pt. Santosh Nahar. (Violinist) ADG Akashvani Delhi

Pt. Vijay Shankar Mishra (Musicologist)

Compere- Ms. Tulja Sharma

Prawah Music Society
(Centre for Music & Performing Arts)
Presents
a two day festival of Hindustani Classical Music
In Collaboration with India Habitat Centre

Programme 18th & 19th July 2024

First Day Programme

Dr. Rindana Rahasya Vocal
Dr. Chandrima Majumdar Sarod
Sh. Sagar Gujrati Tabla
Sh. Zakir Dholpuri Harmonium
Ustad Akhtar Hasan Tabla

Chief Guest: Shri Leeladhar Mandloi
Former Director General- Prasar Bharti Delhi &
Co Director- Vishwarang International Art &
Culture Fest, Bhopal

Guest of Honour: Mr. Ravindra Mishra, Senior Music Critic

18th July 2024, 6:30 PM Onwards
Amaltas Hall, India Habitat Centre
Gate No. 3, Lodhi Road, New Delhi
Compere - Ms. Tulja Sharma

Prawah Music Society
(Centre for Music & Performing Arts)
Presents
Second Day Programme

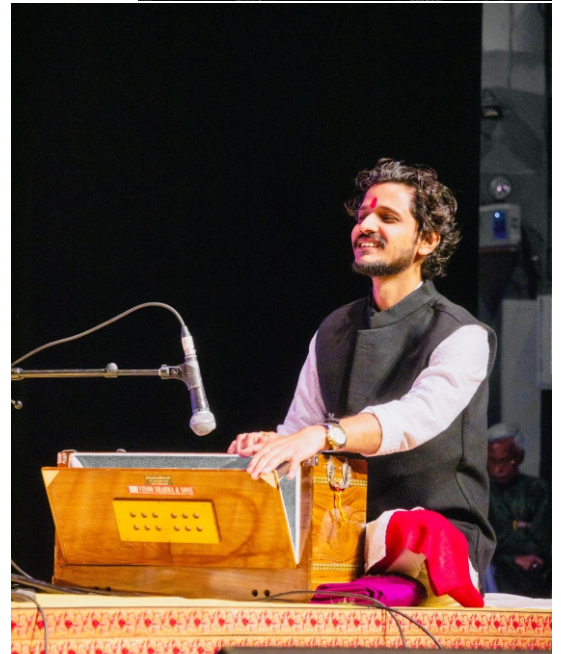
Pt. Bholanath Mishra Vocal
Pt. Abhay Rustum Sopori Santoor
Pt. Sukanta Bajpayee Tabla
Sh. Zakir Dholpuri Harmonium
Pt. Durjay Bhaumik Tabla
Tanish Dholpuri Sarangi
Sh. Chand Singh Tabla

Guest of Honour: Pt. Santosh Nahar. (Violinist) ADG Akashvani Delhi
Pt. Vijay Shankar Mishra (Musicologist)

19th July 2024, 6:30 PM Onwards
Amaltas Hall, India Habitat Centre
Gate No. 3, Lodhi Road, New Delhi
Compere- Ms. Tulja Sharma
R.S.V.P. : 09810015797, 09868204213
Email : umagarg99@gmail.com

प्रवाह म्यूजिक सोसाइटी का 15 वर्षों का यह सफर हमारे सामूहिक प्रयास की कहानी है। इस को करने में सभी का अमूल्य समय और सहयोग मुझे हमेशा मिलता रहा है। मैं सभी सहयोगियों, सदस्यों का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। समारोह में अपनी उत्कृष्ट साधनाओं को प्रस्तुत करने वाले सभी सम्माननीय कलासाधकों के प्रति हम सदैव कृतज्ञ हैं।

इस वर्ष 14 सितंबर को त्रिवेणी कला संगम के सभागार में प्रवाह म्यूजिक सोसायटी के 15 वर्ष पूर्ण होने का और इसके संस्थापक विदुषी उमा गर्ग के 75 वर्ष पूर्ण होने का हम जश्न मना रहे हैं। इस कार्यक्रम में हमारे साथ कई अतिथि कलाकार होंगे। बांसुरी पर पंडित चेतन जोशी, तबले पर पंडित राम कुमार मिश्र, पंडित शैलेन्द्र मिश्र, गायन विदुषी उमा गर्ग अपनी शिष्याओं, डॉ रिंदाना रहस्य, डॉ राजनंदिनी के साथ। हारमोनियम पर होंगे श्री ललित सिसोदिया।



इस वर्ष हम कार्यक्रम के साथ एक सम्मान समारोह भी आयोजित करने जा रहे हैं। जिसमें हम भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य के तीन प्रतिष्ठित और प्रतिनिधि कलाकार, एक युवा कलाकार को सम्मानित करेंगे। उनके नाम इस प्रकार हैं।

प्रवाह कला रत्न सम्मान।

विदुषी प्रो कृष्णा बिष्ट	गायन
पंडित राजेन्द्र प्रसन्ना	वादन
विदुषी शोभना नारायण	नृत्य
प्रवाह कला युवा सम्मान	
डॉ अविनाश कुमार।	



मंच संचालन करेंगी

सुश्री साधना श्रीवास्तव।

सदैव की भाँति आपकी उपस्थिती एवं
आप सबका साथ अपेक्षित है।

विदुषी प्रो० उमा गर्ग,
संस्थापक एवं अध्यक्ष

